डा० राधाकृष्णन

भारतीय दर्शन

2

भारतीय दर्शन-2

हिन्दू धर्म–पुनर्जागरण काल से वर्तमान तक

(Indian Philosophy का हिन्दी अनुवाद)

डॉ. राधाकृष्णन

University Department of Yoga R.U.
No/PGDY/ 191
Library

राजपाल

विषय-सूची

अध्याय 1 : विषय-प्रवेश 9-18

दर्शनशास्त्रों का प्रादुर्भाव—वेदों के साथ सम्बन्ध—सूत्र-साहित्य—सामान्य विचार-धाराएं।

अध्याय 2 : न्यायशास्त्र का तर्कसम्मत यथार्थवाद 19-150

न्याय और वैशेषिक—न्याय की प्रारम्भिक अवस्था—साहित्य और इतिहास—न्याय का क्षेत्र—परिभाषा का स्वरूप—प्रत्यक्ष अथवा अन्तर्दृष्टि—अनुमान-प्रमाण—परार्थानुमान—आगमन अनुमान—कारण—उपमान अथवा तुलना—आप्त प्रमाण—ज्ञान के अन्य रूप—तर्क और वाद—स्मृति—संशय—हेत्वाभास—सत्य अथवा प्रमा—भ्रांति—न्याय के प्रमाणवाद का सामान्य मूल्यांकन—भौतिक जगत्—जीवात्मा और उसकी नियति—जीवात्मा तथा चेतना के सम्बन्ध के विषय में न्याय के सिद्धान्त पर कुल आलोचनात्मक विचार—नीतिशास्त्र—ब्रह्मविद्या—उपसंहार।

अध्याय 3 : वैशेषिक का परमाणु-विषयक अनेकवाद 151-213

वैशेषिक दर्शन—निर्माणकाल तथा साहित्य—ज्ञान का सिद्धान्त—पदार्थ—द्रव्य—परमाणुवाद की प्रकल्पना—गुण—कर्म अथवा क्रिया—सामान्य—विशेष—समवाय—अभाव—नीतिशास्त्र—ईश्वर—वैशेषिक दर्शन का सामान्य मूल्यांकन।

अध्याय 4 : सांख्य दर्शन 214-287

प्रस्तावना—पूर्ववर्ती परिस्थिति—साहित्य—कार्यकारणभाव—प्रकृति—गुण—विकास—देश और काल—पुरुष—लौकिक जीवात्मा—पुरुष और प्रकृति—पुरुष और बुद्धि—ज्ञान के प्रकरण—ज्ञान के स्रोत—सांख्य की ज्ञान सम्बन्धी प्रकल्पना पर कुछ आलोचनात्मक विचार—नीतिशास्त्र—मोक्ष—परलोक-जीवन—क्या सांख्यनिरीश्वरवादी है—सामान्य मूल्यांकन।

अध्याय 5 : पतंजलि का योगदर्शन 288-320

प्रस्तावना—पूर्ववर्ती परिस्थिति—निर्माणकाल और साहित्य—सांख्य और योग—मनोविज्ञान—प्रमाण—योग की कला—नैतिक साधना—शरीर का नियन्त्रण—प्राणायाम—इन्द्रिय-निग्रह—ध्यान—समाधि अथवा एकाग्रता— मोक्ष—कर्म—अलौकिक सिद्धियां—ईश्वर—उपसंहार।

अध्याय 6 : पूर्वमीमांसा 321-367

प्रस्तावना—रचनाकाल और साहित्य—प्रमाण—प्रत्यक्ष ज्ञान—अनुमान—वैदिक प्रामाण्य—उपमान प्रमाण—अर्थापत्ति—अनुपलब्धि—प्रभाकर की ज्ञानविषयक प्रकल्पना—कुमारिल की ज्ञानविषयक प्रकल्पना—आत्मा—यथार्थता का स्वरूप—नीतिशास्त्र—अपूर्व—मोक्ष—ईश्वर।

अध्याय 7 : वेदान्त-सूत्र 368-381

प्रस्तावना—सूत्रकार तथा सूत्रों की रचना का काल—अन्य सम्प्रदायों के साथ सम्बन्ध—अध्यात्मविद्या-सम्बन्धी विचार—उपसंहार।

अध्याय 8 : शंकर का अद्वैत वेदान्त 382-577

प्रस्तावना—शंकर का जंन्मकाल—साहित्य—गौडपाद—अनुभूत ज्ञान का विश्लेषण—सृष्टि-रचना—नीतिशास्त्र और धर्म—गौडपाद और बौद्ध धर्म—भर्तृहरि—भर्तृप्रपंच—उपनिषदों तथा ब्रह्मसूत्र के साथ शंकर का सम्बन्ध—शंकर तथा अन्य सम्प्रदाय—आत्मा—ज्ञान का तन्त्र या रचना—प्रत्यक्ष—अनुमान—शास्त्र-प्रमाण—विषयी विज्ञानवाद का निराकरण—सत्य की कसौटी—तार्किक ज्ञान की अपूर्णता—अनुभव—अनुभव, तर्क तथा श्रुति—परा तथा अपरा विद्या—शंकर के सिद्धान्त और कुछ पाश्चात्य विचारों की तुलना—विषयनिष्ठ मार्ग : देश, काल और कारण—ब्रह्म—ईश्वर अथवा शरीरधारी परमात्मा—ईश्वर का मायिक रूप—जगत् का मिथ्यात्व—मायावाद—अविद्या—क्या जगत् एक भ्रांति है—माया और अविद्या—प्राकृतिक जगत्—जीवात्मा—साक्षी और जीव—आत्मा और जीव—ईश्वर और जीव—एकजीववाद तथा अनेकजीववाद—नीतिशास्त्र—शंकर के नीतिशास्त्र पर किए गए आरोपों पर विचार—कर्म—मोक्ष—परलोक—धर्म—उपसंहार।

अध्याय 9 : रामानुज का ईश्वरवाद 578-632

प्रस्तावना—आगम—पुराण—रामानुज का जीवन—इतिहास और साहित्य—भास्कर—यादवप्रकाश—ज्ञान के साधन—कारण तथा द्रव्य—आत्मा तथा चैतन्य—ईश्वर—जीवात्मा—प्रकृति—सृष्टि-रचना—नैतिक तथा धार्मिक जीवन—मोक्ष—सामान्य मूल्यांकन।

अध्याय 10 : शैव, शाक्त तथा परवर्ती वैष्णव ईश्वरवाद 633-670

शैव सिद्धान्त—साहित्य—सिद्धान्त—प्रत्यभिज्ञादर्शन—शाक्त सम्प्रदाय—मध्वाचार्य—जीवन तथा साहित्य—ज्ञान का सिद्धान्त—ईश्वर—जीवात्मा—प्राकृतिक जगत्—ईश्वर और जगत्—नीतिशास्त्र और धर्म—समीक्षात्मक विचार—निम्बार्क—वल्लभ—चैतन्य का आन्दोलन।

अध्याय 11 : उपसंहार 671-684

दार्शनिक विकास—समस्त दर्शनपद्धतियों का समन्वय—दर्शन और जीवन—आधुनिक युग में दर्शनशास्त्र का ह्रास—वर्तमान स्थिति।

परिशिष्ट : टिप्पणियां, पारिभाषिक शब्द 685-696

महान् भारतीय दार्शनिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन की तर्क और विज्ञान के आधार पर व्याख्या की और उसे पूरी दुनिया तक पहुँचाया। उनका विश्वविख्यात ग्रंथ *इंडियन फिलॉसफी* वर्षों तक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाता रहा। प्रस्तुत ग्रंथ *इंडियन फिलॉसफी* का प्रामाणिक हिंदी अनुवाद है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय दर्शन ने जो पड़ाव पार किए हैं, इस ग्रंथ में उन सभी का क्रमिक विवेचन किया गया है। इसकी विशेषता यह है कि भारतीय दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों की तुलना इसमें दुनिया के विभिन्न मतों और दर्शनों से की गई है। विषय के अत्यंत गूढ़ और गहन होने के बावजूद प्रस्तुत ग्रंथ की भाषा सहज और सरल है।

राजपाल

₹ 525

9 788170 281887